Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (A)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editors :
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (A) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal

E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani
RESEARCH JOURNEY

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	श्रीलंका में रामायण के सिंहली और तमिल भाषा के अनुवाद	मूळ लेखिका - डॉ. कुमुदिनी मद्दुमगे, अनुवाद – डॉ. अमिला दमयंती	07
2	साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.व्ही.जी. गुंडरे	11
3	मुक्तीबोध के काव्य में संस्कृति	डॉ. मुरलीधर लहाडे	14
4	भारतीय संस्कृति और साहित्य किसान विमर्श	डॉ. गोपाळ शंकर भोसले	18
5	बदलता भारतीय संस्कृतिक परिदृश्य और भारतीय साहित्य में नारी	अरविंद घोडके	20
6	राजस्थान के संत साहित्य का हिंदी में योगदान	डॉ. हरीश कुमार	24
7	भारतीय साहित्य और संस्कृति	डॉ. सुधीर कुमार विश्वकर्मा	29
8	सरकारी प्रयास और किन्नर समुदाय : समकालीन विमर्श	सुधा मिश्रा	35
9	भारतीय भाषाएं और रामकथा साहित्य	प्रा. विठ्ठल टेकाळे	40
10	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	योजना नाकाडे	44
11	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. शफीक चौधरी	47
12	वैश्विक परिदृश्य : 'कामायनी और अन्य रचनाओं में भारतीय संस्कृति'	डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला	57
13	बाजार और तकनीकी	प्रा. व्ही. डी. कापावार	55
14	भारतीय संस्कृति में विवाह का महत्व	डॉ. विठ्ठलसिंह धुनावत	58
15	आधुनिक बोध की अग्रदूत 'रुकोगी नहीं राधिका'	डॉ. परमेश्वर काकडे	61
16	उपभोक्तावाद और वृध्दावस्था विमर्श	प्रा. संजीवनी पाटील	65
17	आदिवासियों की सभ्यता और संस्कृति	डॉ. माया मसराम	69
18	हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति	मुकेश चौहान	73
19	भारतीय संस्कृति और संस्कृत साहित्य	डॉ. वीरेंद्र कुमार जोशी	77
20	हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जन-जीवन	डॉ. वनिता कुलकर्णी	82
21	स्वयं प्रकाश के कहानियों में दलित विमर्श	डॉ. अनिसबेग मिर्झा	86
22	भारतीय संस्कृति और संगीत	डॉ. सुरेखा रत्नपारखी	90
23	मणि मधुकर के उपन्यासों में मानवाधिकार	डॉ. मंत्री आडे	94
24	प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ. सिद्धेश्वर गायकवाड	101
25	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. नागरत्ना एस.	104
26	भास्कर चंदनशिव की कहानी 'लाल किचड' में कृषक जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ती	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	108
27	दलित विमर्श स्वरूप एंव व्याप्ती	डॉ. गजानन सवने	111
28	'तीसरी ताली' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श	प्रा. सौ. कविता तळेकर	113
29	भारतीय नारी का विभिन्न परिवेश में योगदान	डॉ. गीतांजली मोटे	116
30	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	डॉ. संगीता मोरे	120
31	आधुनिक हिंदी काव्य में प्रगतिशिलता	श्री. अली शेख	125
32	निर्मल वर्मा के कहानियों में आधुनिक जीवन और संस्कृति	डॉ. मुखत्यार शेख	128
33	हिंदी साहित्य में स्त्री की स्थिति : एक विवेचन	डॉ. अशोक कुमार मीना	132
34	भारत के आदिवासी इस देश के मूल निवासी है।	प्रा. लेफ्ट. ज्ञानेश्वर चिट्टमपल्ले	141

हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जन-जीवन

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

प्रा.डॉ. वनिता बाबुराव कुलकर्णी
हिंदी विभागाध्यक्षा
कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ.
ता. सोनपेठ जी. परभणी 431516
मोबाइल क्रमांक 9423138878

प्रस्तावना —

आदिवासियों का जीवन प्रकृति पर आश्रित है वह रोटी की खोज में वन —वन भटकते रहते हैं सामान्यतः शिकार पर अपनी भूख मिटाना उनकी प्रवृत्ति है वास्तव में आदिवासियों का जीवन पशु गत होता है वह अभाव में जन्म लेता है ,अभाव में जीवन व्यतीत करता है और अभाव में ही मृत्यु को प्राप्त होता है भारत को आजादी मिलकर कई वर्ष हुए हैं फिर भी जिन लोगों का विकास अभी तक नहीं हुआ ऐसे लोगों में आदिवासी सर्वप्रमुख है यहां आदिवासी की इस अलग अस्मिता के लिए कोई जगह नहीं है क्या आज आदिवासी समाज स्वतंत्र है ?आदिवासी समाज वनवासी समाज है आदिवासी समुदाय के लोग जंगलों में रहकर अपना जीवन बिता रहे हैं किंतु उन्हें जंगलों में भी चैन से रहने नहीं दिया जा रहा है जंगलों की अवैध कटाई से उनका आवास छीन लिया जाता है, झीलों नदियों को प्रदूषित कर पीने के पानी पर प्रतिबंध लगाया जाता है फैक्ट्रियों के गंदे पानी और कचररों से खेतों को बंजर बनाया जाता है क्या उनकी आजादी यही है ? शोषण उनके जीवन का अंग है और इस शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए वह संगठित नहीं हो पा रहा है डॉ विनायक तुकाराम के शब्दों में - "प्रत्येक सदी में छला, सताया गया ,नंगा किया गया और एक सोची समझी साजिश के तहत वन-जंगलों में लोगों द्वारा भगाया गया एक असंगठित मनुष्य अपनी स्वतंत्र परंपरा से सहस्त्र सालों से गांव देहातों से दूर घनेजंगलों में रहनेवाला संगहिन मनुष " [1]

आधुनिक काल की सबसे बड़ी उपलब्धि गद्य साहित्य का आविर्भाव है उपन्यास साहित्य हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें मानव जीवन के गहन सूक्ष्म एवं संवेदनशील भावों की अभिव्यक्ति हुई है हिंदी उपन्यासों में मानव जीवन के सूक्ष्म एवं जटिल यथार्थ का अनुभवाकंन हुआ है आदिवासी जन -जीवन उनकी सांस्कृतिक परंपरा यह मान्यताएं रहन-सहन खान-पान उत्सव पर्व भाषा आदि से हिंदी उपन्याम साहित्य साक्षात्कार करता है कहा जाता है कि "आर्यों ने भारतीय प्रायद्वीप में आकर द्रविडों को परास्त किया और पराजित द्रविडों ने उनकी दासता स्वीकार कर ली किंतु द्रविडों ने हार या गुलामी नहीं मानी और जंगलों में अथवा पहाड़ों पर जा बसे। वैसे जुझारू जीवन जीने वाले लोग ही जनजाति या आदिवासी कहलाए।"[2] हिंदी के आदिवासी उपन्यास का उद्देश्य है स्थिर स्थान पर गतिमान समय में जीते हुए आदिवासियों की के समग्र पहलुओं को उद्घाटित करना है।

आदिवासी अर्थ परिभाषा स्वरूप —

"आदि याने पहला आरंभ तो आदिम का अरबी अर्थ मनुष्य का आदी प्रजापति मनु के समान्तर आदिवासी याने किसी प्रदेश या सत्य के मूल निवासी।"[3] आदिम जाति वनवासी गिरिजन अलवा या जनजाति जैसे अनेक शब्दों का प्रयोग आदिवासियों के लिए किया जाता है ।अंग्रेजी के ट्राइब्स का आदिवासी यह हिंदी रूपांतरण है आदिवासी यह समाज अनेक उपजातियों से में या जनजातियों में विभाजित है यह जनजातीया समाज के सहयोग से बिल्कुल दूर है ।निसर्ग के साथ अपना स्नेह संबंध जोड़ते हैं। आदिवासियों का जीवन

संस्कृति से संबंधित होता है ।यह लोग आदिम काल से ही जंगलों पहाड़ों में रहकर कंद मूल ,फल खाकर अपना गुजारा करते हैं तथा स्वाभिमान पूर्वक अपनी जीवन -शैली ,भाषा ,संस्कृति, जीवनमूल्य आदि को महत्व देकर स्वाभिमान से अपना जीवन जीते हैं।

प्रो.गिलानी के अनुसार "एक विशिष्ट भू प्रदेश में रहने वाला समान बोली बोलने वाला अक्षरों की पहचान न होने वाला समूह गुट आदिवासी समाज कहलाता है।"[4] डॉ विवेकी राय के अनुसार " पिछड़े अंचलों, पहाड़ों वनों के निवासियों को आदिम आदिवासी माना है ।"[5] आदिम जातियां आदिवासी या वनवासी नाम से पहचानी जाती है। एडम्सन होबल के अनुसार "जनजाति एक सामाजिक समुदाय है जो विशिष्ट भाषा बोलता है जिसकी एक विशिष्ट संस्कृति होती है, जो इस जनजाति को अन्य जनजातियों से पृथक करती है।जनजाति के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह राजनीतिकता के आधार पर संगठित हो"[6] आदिवासी समाज विकास के नाम पर कटा हुआ है, संदर्भहीन है । आज आदिवासी शब्द का प्रयोग होते ही सामान्यतः यह चित्र उपस्थित होता है कि आदिवासी वह व्यक्ति है जिसका जीवन हजारों सालों से छलनी के समान होता गया है, जो आधुनिकता से दूर है जो पर्वत घाटियों में जी रहा है। वह सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करता है ।यह एक परिस्थिति है कि भारत जैसे विकसनशील राष्ट्र में आदिवासी विकलांग स्थिति में जी रहा है ।डॉ मधुकर खराटे के शब्दों में " देश की कुल जनसंख्या का लगभग पंद्रहवा भाग आदिवासी एवं जनजाति आजादी के साठ वर्ष बाद भी गुमनाम जी रहा है। कभी घुमंतू कभी अपराधी तो कभी असभ्य बनकर इन्हीं के नाम पर करोड़ों अरबों रुपए आवंटित हुए हैं । लेकिन इनकी दशा में अभी भी गुणात्मक विकास दिखाई नहीं पड़ता।"[7] आदिवासी समाज जीवन आधुनिक माहौल से अलिप्त है आदिवासी जाति अपने आपको वन जंगल में ही सुरक्षित समझती है। शहरों से नाता जोड़ना अपनी जिंदगी को नाटकीय समझते हैं । आदिवासी जीवन गांव,नगर या महानगर की तुलना में भिन्न है। उनकी संस्कृति परंपराएं रूढ़ियाँ मान्यताएँ उनका रहन-सहन सबकुछ अलग है ।उनके इस अलग जीवन को कस्बों से लेकर महानगरों के साथ जोड़ने का प्रयत्न आदिवासी उपन्यासकारों ने किया। वर्तमान मानव समाज विकासोन्मुख है। वर्तमान के गतिशील प्रवाह में एक ऐसा भी समाज है, जो अपने अस्तित्व को कायम रखना चाहता है ,वह है आदिवासी समाज । गतिशील समाय में स्थिर आदिवासी समाज अपनी आस्था ,भाषा, कलारुचि, रूढियाँ ,नृत्य और तमाम अतीतोन्मुखी सांस्कृतिक कनावरों से अलंक्रत है । यहाँपर हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी विमर्श को लेकर चलनेवाले और आदिवासी जन -जीवन का चित्रण करने वाले कुछ उपन्यासों पर विचार किया गया है ।कुछ उपन्यास निम्न है -

आदिवासी जन-जीवन—

जंगल का राजा आदिवासी है। प्रकृति के गोद में पलने वाला वनपुत्र है। आज सरकारी योजना के कारण जंगल- कटाई ,खानदान ,बिजली ,संयंत्र ,नहर तालाब निर्माण के कारण आदिवासियों को जंगल से हटाया जा रहा है ।विस्थापित आदिवासी आज विद्रोही बनकर अधिकार के लिए लड़ रहे हैं ।अपनी भूमि पर जंगल पर दूसरों के अधिकार का कड़ा विरोध करने वाले आदिवासी है। आदिवासी समाज की सामूहिकता प्रधान प्रवृत्ति है। लोकगीत ,लोककथा आदिवासी मन का दस्तावेज है ।आदिवासी समाज दुखी और सताया हुआ अन्याय अत्याचार से पीड़ित है ।जंगल और जमीन उनकी संपत्ति है ।प्रकृति की गोद में स्वच्छंदि बना आदिवासी विद्रोही बनता जा रहा है।

आदिवासी जनजीवन की समस्या की जड़ अशिक्षा है ।"सोनामाटी" ऊपन्यास में भगवान द्विवेदी लड़कियों के शिक्षा के विरुद्ध है। वह अपनी बेटी को पढ़ने के विरोध करते हुए कहते हैं -"ज्यादा पढ़ना लिखना

दिक्कत पैदा करेगा। लड़की चूल्हे- चौके के लिए बेकार हो जाएगी।खानदान में या गाँव घर में किसी औरत ने नौकरी नहीं की।"[7] शंकर शेष कृत "पोस्टर " नाटक में आदिवासी जन- जीवन का चित्रण हुआ है । प्रस्तुत नाटक में आज आदिवासी जाति पर अन्याय एवं शोषण होता है और वे चुपचाप सहन करते हैं । अशिक्षीत होने के कारण जमींदारों का विरोध नहीं कर सकते हैं।ये लोग दिन रात मेहनत करते हैं और अपने मालिक से जो मिलता है इसी में गुजारा करते हैं। इसी अन्याय अत्याचार से भरी जिंदगी में परिवर्तन लाने की आवश्यकता को महसूस किया गया है।

करनट आदिवासियों में नारी की सामाजिक स्थिति अत्यंत दर्दनाक है "कब तक पुकारूं" उपन्यास का नायक सुखराम अपने शब्दों में कहता है- "औरत! तु मेरे पांव की जूती है कजरी और प्यारी दोनों मेरी है। कजरी कहे कि मन की करेगी वह नहीं होगा। प्यारी भी मेरी होगी।"[8] आदिवासी नारी को गांव के ठाकुरो और पुलिस लोगों के अत्याचार का शिकार बनना पड़ता है । आदिवासी नट समाज उपेक्षित समाज है।

भारत के आदिवासियों की समग्र स्थितियाँ आजादी के पहले जैसी थी वैसे ही आजादी के बाद भी दिखाई देती है। हालांकि भारतीय संविधान ने आदिवासियों को कई अधिकार प्रदान किए थे। "स्वतंत्र भारत के संविधान में दलित आदिवासी गरीबों को आत्मसम्मान से जिनके पूरे अधिकार प्रदान किए गए किए हैं फिर भी स्वार्थ लिप्त भ्रष्ट लोग और सामंती प्रवृत्तियों के ठेकेदार षड्यंत्र से बेईमानी से कूटनीति से दलित आदिवासी गरीबों के आत्मसम्मान के साथ खिलवाड़ करते हुए उनकी इज्जत को नीलाम करने की पूरी व्यवस्था करते हैं।"[9] इन्हीं विसंगतियों का चित्र आदिवासी जनजीवन पर आधारित कई उपन्यासों में मिलता है ।संजीव के "धार" "जंगल जहां शुरू होता है" "पांव तले की धूप" उपन्यासों में आदिवासी जीवन की विसंगतियों और विषमताओं का सजीव चित्रण हुआ है।

अनेक आदिवासी जनजातियों में लड़की को अपना साथी चुनने का पूरा अधिकार होता है। प्रकाश चंद्र मेहता के अनुसार "भील समाज में लड़की को अपना साथी चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता है ।विवाह के पश्चात भी स्त्री अपने पति को छोड़कर अन्य पुरुष के साथ रह सकती है, परंतु उस पुरुष को झगड़ा चुकाना पड़ता है।"[10] समग्र आदिवासी जन-जीवन में स्त्री को काफी अधिकार दिए जाते हैं ,परंतु यह बात भी सच है कि उनका शोषण भी कई तरीके से होता है।

निष्कर्ष -

आदिवासी समुदाय अपनी भूमि से जुड़ा होता है , वैसे ही वह अपनी संस्कृति तथा अपने श्रद्धा के साथ भी जुड़ा होता है। आदिवासी गरीबी और अभाव ग्रस्त जीवन के बावजूद भी अपने सदियों पुराने विशिष्ट संस्कृति का दामन थामे हुई है ऐसी अवस्था में वे अपने जीवन का संघर्ष करते रहते हैं। हिंदी उपन्यास के माध्यम से आदिवासियों के समग्र संस्कृति,परंपरा , लोकनृत्य, गीत ,उत्सव ,त्योहार, मूल्यों एवं बोलियों को सुरक्षित रखने का प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय है ।

आदिवासियों की संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए उनको विकास चक्र में लाना आवश्यक है। हिंदी उपन्यास कारों ने अपनी कथावस्तु में आदिवासी जीवन को स्थान देकर उन पर हो रहे अत्याचार शोषण तथा अमानवियता का पता लगाया है ।अंत में यही कहा जा सकता है कि भारत को यदि सच्चे अर्थ में तीसरी महासत्ता बनाना है तो आदिवासियों की दशा एवं दिशा को बदलना तथा सही मायनों में शिक्षित करना इन पर हो रहे अत्याचार शोषण के प्रति आवाज लगाना ही सही अर्थ में आदिवासी को यथेष्ठ स्थान देना कहलाएगा।

संदर्भ -

1. हाशिये की बेचारगी- सं.महेश शंकर चौधरी-पृष्ठ 250
2. भारतीय आदिवासी साहित्य-सं .वैजनाथ अनमूल वाड -पृष्ठ 180

3. नालंदा विशाल शब्द सागर -सं.नवलजी- हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवनपृष्ठ -125
4. रतीय आदिवासी समाज- ए वाय कोंडेकर - पृष्ठ- 6 5)आलोचना -अप्रैल-जून -1984 -पृष्ठ 47
5. भारत की जनजातियांँ- ड.संतोष दास -पृष्ठ 17
6. सोनामाटी -विवेकी राय -पृष्ठ 298
7. कब तक पुकारू -रांगेय राघव - पृष्ठ 99
8. संजीव जनधर्मी कथाशिल्पी -सं.गिरीश काशिद पृष्ठ - 86
9. आदिवासी संस्कृति एवं प्रथाएंँ- डॉ प्रकाश चंद्र मेहता- पृष्ठ स 171

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani